पर्यावरण दिवस पर हिंदी विवि में हुआ पौधारोपण

पर्यावरण क्लब के द्वारा चलाया जा रहा है पर्यावरण जागरूकता अभियान

99 एकड़ भूमि ग्रीन जोन, गांधी हिल पर छोड़ा गया बत्तख

वर्धा, 06 जून, 2011: पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक दिन संगोष्ठी कर लेने या नाम के लिए पौधे लगा देने से आज ग्लोबल वार्मिंग के खतरे से मुकाबला नहीं किया जा सकता है। पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अनूठा मिसाल देखनी हो तो आपको गांधी जिले के महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में जाना चाहिए। पंचटीला पहाड़ी पर जहां मिट्टी नहीं पत्थर का साम्राज्य है, उन पत्थरों में पेड़ लगाने की योजना को लोग सराह रहे हैं। यही कारण है परिसर हरा-भ्रा दिखने लगा है।

पर्यावरण दिवस पर कुलपति विभूति नारायण राय की अध्यक्षता में मुख्य अतिथि पर्यावरण प्रेमी मुरलीधर बेलखोडे ने शीशम का पौधा लगाकर कार्यक्रम की शुरूआत की। तदुपरांत कुलपति राय, प्रतिकुलपति प्रो.ए.अरविंदाक्षन, कुलसचिव डॉ.के.जी.खामरे, वित्ताधिकारी अजीत सिंह, विशेष कर्तव्याधिकारी नरेन्द्र सिंह, उपकुलसचिव पीएस. सिंह, दूरशिक्षा के डॉ.ललित किशोर शुक्ला,सहायक कुलसचिव राजेश्वर सिंह, विद्यार्थियों की ओर से विनय भूषण व कमला देवी ने पौधारोपण किया।

फोटो कैप्शन- विवि परिसर में वृक्षारोपण करते हुए कुलपति विभूति नारायण राय साथ में विवि के कर्मी व विद्यार्थी।

कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र था-गांधी हिल पर बत्तख का छोड़ा जाना। कुलपति राय सहित वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में एक जोड़े बत्तख को गांधी हिल पर विचरण करने के लिए छोड़ा गया। इस दौरान कुलपति राय ने कहा कि गांधीजी के नाम पर यह विवि है, हमें चाहिए कि हम कैसे प्रकृति प्रेमी बनें। आप और हम एक पौधे लगाकर निश्चिंत मत होईए अपितु इसे व्यवहार में अपनाएं कि यह पौधा कैसे विकसित हो ताकि हम जीवन में आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ दे पाएं। उन्होंने कहा कि वन बचेंगे तो प्रकृति बचेगी, प्रकृति बचेगी तो यह धरती बचेगी। धरती बचेगी तो जीवन बचेगा। पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होकर वह सबकुछ बचेगा जो जीवन के लिए आवश्यक है। वन लगेंगे तो वर्षा, जल, हवा, मिट्टी और जिंदगी कभी समाप्त नहीं होगी। हमें लगा कि यहां पेड़ लगाना और बचाना बहुत कठिन कार्य है लेकिन नरेन्द्र सिंह ने परिसर में हरियाली फैलाने में अपनी महती भूमिका निभाई है। इस दौरान नरेन्द्र

सिंह ने कहा कि पत्थर वाले जमीन को खोदकर गढ्ढे में मिट्टी डालकर पौधे को लगाया गया जिसे आप परिसर में देख रहे हैं।

गौरतलब है कि विश्वविद्यालय के 212 एकड भूमि में से 99 एकड़ भूमि को 'ग्रीन जोन' के रूप में तब्दील कर पर्यावरण के लिए पेड़ लगाने तथा 'बर्ड जोन' बनाने की योजना बनायी गई है। कुलपति राय से पूछने पर उन्होंने बताया कि यहां के वन विभाग से संपर्क कर मौसम के अनुकूल पक्षियों को 'ग्रीन जोन' में संरक्षण दिया जा सकता है। नवनिर्मित कबीर हिल पर खरगोश, मोर, नेवला जैसे पशु-पक्षियों को संरक्षित किया जाएगा। साथ ही इस हिल को वनों से आच्छादित करने के लिए यहां के लिए उपयुक्त पेड़ लगाए जा रहे हैं। पेड़ों के बचाव हेतु पानी सिंचाई के लिए पहाड़ पर पानी संचित करने की योजना भी बनाई गई है।

विवि में इन दिनों पानी संरक्षण, प्रदूषण से निजात के नुस्खे के लिए जगह-जगह पोस्टर, पर्चा लगाकर पर्यावरण हेतु जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है क्योंकि कुलपति विभूति नारायण राय ने ग्लोबल वार्मिंग के खतरे को गंभीरता से लेते हुए विश्वविद्यालय में पर्यावरण क्लब का गठन किया। भाषा विद्यापीठ के चीनी भाषा के असिस्टेंट प्रोफेसर अनिर्बाण घोष (जो कि पर्यावरण के प्रति एक कार्यकर्ता के रूप में कार्य कर रहे हैं), को पर्यावरण क्लब का प्रभारी बनाया गया है। विवि परिसर में पानी संचयन व संरक्षण के लिए जगह-जगह कुएं तथा बोरवेल बनाए जा रहे हैं। पर्यावरण के लिए किए गए प्रयासों के संदर्भ में कहा जा सकता है कि-

ख़ुदी को कर बुलंद इतना कि
हर तद्वीर् से पहले
बंदे से ख़ुदा पूछे
बता तेरी रज़ा क्या है।

अमित कुमार विश्वास
(मानद् पब्लिसिटी अधिकारी)